International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 09 Issue: 07 | July - 2025 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

भारत रूस वैश्विक साझेदारी : अतीत से वर्तमान तक

अनिलेश कुमार पासवान
शोध छात्र
पंजीयन संख्या : 700/2022
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग
ति. मां. भा. वि. वि. भागलपुर

सारांश:

भारत और रूस के मध्य संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में गहरी रणनीतिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परंपराएँ निहित हैं। भारत की स्वतंत्रता के बाद, विशेष रूप से नेहरू युग से प्रारंभ होकर सोवियत संघ और भारत के बीच जो मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हुए, वे समय के साथ-साथ केवल कूटनीतिक औपचारिकताओं तक सीमित न रहकर, बहुआयामी रणनीतिक साझेदारी में परिवर्तित हो गए। 1971 की भारत-सोवियत मैत्री संधि ने इन संबंधों को एक नया आयाम दिया, जिसने शीत युद्ध के समय भारत को वैश्विक स्तर पर एक सुरक्षित और सशक्त स्थिति प्रदान की। शीत युद्ध के दौरान सोवियत संघ ने भारत के औद्योगिक विकास, रक्षा क्षेत्र और अंतरिक्ष कार्यक्रमों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। वहीं भारत ने भी वैश्विक मंचों पर रूस के दृष्टिकोण को संतुलित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात दोनों देशों के संबंधों में थोड़ी शिथिलता आई, किंतु 2000 के बाद राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और भारतीय नेतृत्व ने संबंधों को "विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी" के रूप में पुनर्जीवित किया। वर्तमान समय में भारत और रूस के संबंध बहुपक्षीय मंचों जैसे ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन (SCO), और संयुक्त राष्ट्र में भी सक्रिय रूप से दिखाई देते हैं। रक्षा क्षेत्र में एस-400 मिसाइल प्रणाली, ब्रह्मोस मिसाइल, और साझा सैन्य अभ्यास जैसे प्रकल्प दोनों देशों के मजबूत सहयोग को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त ऊर्जा, विज्ञान, अंतरिक्ष और शिक्षा के क्षेत्र में भी भारत-रूस सहयोग सतत विस्तार की ओर है। हाल के वर्षों में रूस-यूक्रेन युद्ध जैसे वैश्विक संकटों के दौरान भारत की संतुलित कूटनीति ने यह सिद्ध किया है कि भारत-रूस संबंध किसी एक ध्रुवीय राजनीति पर आधारित नहीं हैं, बल्कि यह संबंध रणनीतिक स्वायत्तता और दीर्घकालिक विश्वास पर आधारित हैं।

यह शोध आलेख भारत-रूस वैश्विक साझेदारी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विकास यात्रा, समकालीन संदर्भों तथा भविष्य की संभावनाओं का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह संबंध न केवल द्विपक्षीय स्तर पर बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता रखते हैं। इसलिए भारत और रूस की यह साझेदारी वैश्विक भू-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में एक स्थायी और संतुलित सहयोग का आदर्श उदाहरण बनकर उभरती है।

मूल शब्द (Keywords) : सोवियत संघ, रणनीतिक साझेदारी ,मैत्री संधि ,शीत युद्ध ,रक्षा सहयोग ,ऊर्जा सुरक्षा ,बहुपक्षीय मंच ,ब्रिक्स (BRICS),एससीओ (SCO) ,कूटनीति ,वैश्विक राजनीति ,आर्थिक सहयोग ,तकनीकी सहयोग

साहित्य समीक्षा

भारत-रूस द्विपक्षीय संबंधों पर आधारित यह साहित्य व्यापक और बहुआयामी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। ठाकुर (2019) द्वारा लिखित *भारत-रूस कूटनीति के विविध आयाम* में ऐतिहासिक और समकालीन संदर्भों में द्विपक्षीय कूटनीति की गहराई से चर्चा की गई है, जो विशेष रूप से ऊर्जा, सुरक्षा और रक्षा सहयोग के क्षेत्रों में केंद्रित है। मिश्रा (2021) की कृति *भारत-रूस संबंध: एक ऐतिहासिक अध्ययन* ऐतिहासिक पड़ावों के माध्यम से समकालीन साझेदारी को समझाने का प्रयास करती है। वहीं वर्मा (2020) ने स्वतंत्र भारत की विदेश नीति में रूस की भूमिका को स्पष्ट करते हुए दोनों देशों के आपसी विश्वास और सहयोग की निरंतरता को रेखांकित किया है। Korybko (2021) की पुस्तक *Russia's Pivot to Asia and India's Strategic Role* रूस की एशिया नीति में भारत की अहम भूमिका को वैश्विक शक्ति संतुलन के संदर्भ में प्रस्तुत करती है। जोशी (2022) की कृति वैश्विक शक्ति संरचना में हो रहे परिवर्तनों के बीच भारत-रूस संबंधों की संभावनाओं और

रणनीतिक आवश्यकताओं को उजागर करती है। *सामयिक विमर्श* में प्रकाशित लेख परमाणु ऊर्जा सहयोग की दिशा में गहराई से विचार करता है। इसके अतिरिक्त भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय और विदेश मंत्रालय की रिपोर्टें व्यापार, निवेश और कूटनीतिक साझेदारी पर आधारित ठोस आँकड़ों और नीतिगत विश्लेषणों को उपलब्ध कराती हैं। इस प्रकार, यह समग्र साहित्य भारत-रूस संबंधों को ऐतिहासिक निरंतरता, भू-राजनीतिक यथार्थ, रणनीतिक हित और आर्थिक सहयोग के परिप्रेक्ष्य में समाहित करता है, जो शोध के लिए एक सशक्त आधार प्रस्तुत करता है।

शोध का उद्देश्य एवं परिकल्पना

इस शोध आलेख का उद्देश्य भारत-रूस वैश्विक साझेदारी के ऐतिहासिक विकास, समकालीन स्वरूप और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करना है। भारत और रूस के बीच द्विपक्षीय संबंध शीतयुद्ध काल से ही गहरे और रणनीतिक रहे हैं, जो समय के साथ विभिन्न क्षेत्रों—जैसे रक्षा, ऊर्जा, व्यापार, विज्ञान, शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति—में विस्तारित हुए हैं। यह शोध यह भी स्पष्ट करने का प्रयास करेगा कि कैसे वैश्विक शक्ति संतुलन, अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा, और एशिया-प्रशांत की उभरती भू-राजनीतिक स्थितियाँ भारत-रूस साझेदारी को प्रभावित कर रही हैं।

यह परिकल्पित है कि भारत और रूस की साझेदारी, भले ही समकालीन वैश्विक चुनौतियों से प्रभावित हो, आज भी एक संतुलित, पारस्परिक हितों पर आधारित और दीर्घकालिक रणनीतिक संबंधों की मिसाल बनी हुई है। यह शोध आलेख यह भी इंगित करता है कि दोनों देश कैसे वैश्विक बहुध्रुवीयता की ओर अग्रसर दुनिया में एक-दूसरे के लिए रणनीतिक सहयोगी बने रह सकते हैं।

शोध की कार्यप्रणाली एवं डाटाबेस

इस शोध आलेख की कार्यप्रणाली ऐतिहासिक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धतियों पर आधारित है। शोध के अंतर्गत भारत-रूस द्विपक्षीय संबंधों के ऐतिहासिक विकास को क्रमिक रूप से विश्लेषित किया गया है, जिसमें शीतयुद्ध काल, उत्तर शीतयुद्ध काल और समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य शामिल हैं। प्रमुख प्राथमिक स्रोतों में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय, रूस के राजनयिक प्रकाशन, द्विपक्षीय संयुक्त वक्तव्य, और आधिकारिक रिपोर्टों का उपयोग किया गया है। वहीं द्वितीयक स्रोतों में संबंधित पुस्तकों, शोधपत्रों, नीति दस्तावेजों तथा प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय जर्नलों की सामग्रियों को शामिल किया जाएगा। इस प्रक्रिया में तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से निष्कर्षों प्रस्तुत करने का प्रयास है।

प्रस्तावना :

भारत और रूस के बीच संबंधों की जड़ें इतिहास की गहराइयों में समाई हुई हैं, जिनका विकास समय के साथ-साथ विभिन्न वैश्विक और क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुसार होता रहा है। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात सोवियत संघ (अब रूस) के साथ जो संबंध स्थापित हुए, वे केवल राजनयिक ही नहीं, बल्कि रणनीतिक, रक्षा, आर्थिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक आयामों में भी गहराते चले गए। यह संबंध केवल द्विपक्षीय हितों तक सीमित नहीं रहे, बल्कि वैश्विक मंचों पर भी दोनों देशों ने कई बार साझा दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया। शीत युद्ध के दौर में जब विश्व दो ध्रुवों में बंटा हुआ था, भारत ने गुटनिरपेक्ष नीति अपनाई, परंतु इसके बावजूद भारत और सोवियत संघ के बीच घनिष्ठता बनी रही। 1971 की भारत-सोवियत मैत्री संधि इसका प्रमाण थी, जिसने न केवल भारत की सुरक्षा को बल प्रदान किया बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन में भी भारत की स्थिति को सुदृढ़ किया। वहीं, सोवियत संघ के विघटन के बाद इस संबंध में एक अस्थायी ठहराव आया, किंतु 21वीं सदी के प्रारंभ में दोनों देशों ने अपने संबंधों को "विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी" के रूप में पुनर्परिभाषित किया। आज भारत और रूस रक्षा, ऊर्जा, अंतरिक्ष, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, और बहुपक्षीय मंचों जैसे ब्रिक्स, एससीओ और संयुक्त राष्ट्र में एक-दूसरे के रणनीतिक सहयोगी बने हुए हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध जैसे वैश्विक संकटों के बीच भारत की संतुलित कूटनीति इस संबंध की परिपक्वता को दर्शाती है।

यह शोध आलेख भारत-रूस वैश्विक साझेदारी की ऐतिहासिक यात्रा, प्रमुख मोड़ों, सहयोग के विविध क्षेत्रों, समकालीन चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य दोनों देशों के बहुआयामी संबंधों की प्रकृति और उनके वैश्विक प्रभाव को समझना है, जिससे आने वाले समय में इस साझेदारी की दिशा और संभावनाओं को रेखांकित किया जा सके।

भारत-रूस संबंधों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत और रूस के संबंध विश्व राजनीति के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। इन संबंधों की जड़ें 20वीं सदी के मध्य में उस समय पड़ीं जब भारत ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की और वैश्विक मंच पर एक नवोदित राष्ट्र के रूप में उभरना प्रारंभ किया। उस समय सोवियत संघ (अब रूस) ने भारत को न केवल एक रणनीतिक सहयोगी के रूप में स्वीकार किया, बल्कि उसकी आर्थिक, रक्षा, और औद्योगिक संरचना के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह संबंध केवल तात्कालिक लाभों पर आधारित नहीं था, बल्कि यह दीर्घकालिक दृष्टिकोण, विश्वास, और समान वैश्विक दृष्टिकोण पर आधारित था। [1] भारत-रूस संबंधों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि समय और परिस्थितियों के साथ-साथ इनकी प्रकृति और आयाम बदलते रहे, लेकिन इनकी मूल भावना—आपसी सहयोग, सम्मान और रणनीतिक विश्वास—अखंड बनी रही। चाहे वह शीत युद्ध का समय रहा हो, जब भारत ने गुटनिरपेक्ष नीति अपनाई, या फिर सोवियत विघटन के बाद की वैश्विक उथल-पुथल, भारत और रूस ने हमेशा अपने संबंधों को नये सिरे से मजबूत किया है। आज 21वीं सदी में, जब विश्व बहुध्रुवीयता की ओर अग्रसर है, भारत-रूस साझेदारी वैश्विक शक्ति संतुलन को स्थिर रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

भारत और रूस के संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 19वीं सदी के उत्तरार्ध में ब्रिटिश औपनिवेशिक काल से जुड़ी हुई है। उस समय भारत ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा था और रूस एक उभरती हुई साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में मध्य एशिया में अपने प्रभाव का विस्तार कर रहा था। इस संदर्भ में 'द ग्रेट गेम' शब्द का उपयोग किया जाता है, जो ब्रिटिश और रूसी साम्राज्यों के बीच मध्य एशिया और अफगानिस्तान पर वर्चस्व के लिए चले रणनीतिक संघर्ष को दर्शाता है।[2] ब्रिटिश भारत और रूसी साम्राज्य की सीमा नजदीक आने से भारत की सुरक्षा पर खतरा महसूस किया जाने लगा, जिससे दोनों शक्तियों के बीच तनाव बढ़ा। हालांकि, यह संघर्ष सीधे भारत-रूस संबंध नहीं था, फिर भी यह उनके परोक्ष भू-राजनीतिक संबंधों का प्रारंभिक बिंदु था। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के पश्चात भारत और सोवियत संघ के बीच औपचारिक कूटनीतिक संबंध स्थापित हुए। प्रारंभिक वर्षों में भारत ने गुटनिरपेक्ष नीति अपनाई, जिससे वह किसी भी महाशक्ति के गुट में सम्मिलित होने से बचा रहा। हालांकि, शीत युद्ध की स्थिति में सोवियत संघ और अमेरिका के बीच वैश्विक तनाव के बावजूद, भारत ने सोवियत संघ के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए। सोवियत संघ ने भारत के औद्योगिक विकास, भारी उद्योगों की स्थापना, और वैज्ञानिक तकनीक के क्षेत्र में सहयोग किया। भिलाई इस्पात संयंत्र और अन्य सार्वजनिक उपक्रमों की स्थापना में सोवियत सहायता महत्वपूर्ण रही।[3] जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत और सोवियत संघ के संबंध और भी मजबूत हुए। नेहरू की समाजवादी सोच और पंचवर्षीय योजनाओं के प्रति लगाव ने सोवियत मॉडल को भारतीय योजनाओं में स्थान दिया। सोवियत संघ ने भारत की तकनीकी शिक्षा, विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय सहयोग प्रदान किया। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और साहित्यिक अनुवादों के माध्यम से भी दोनों देशों के नागरिकों के बीच संबंधों को प्रगाढ़ किया गया।

भारत-रूस संबंधों का एक महत्त्वपूर्ण मोड़ 1971 की *भारत-सोवियत मैत्री एवं सहयोग संधि* रही। यह संधि उस समय हुई जब भारत-पाकिस्तान युद्ध की संभावना बढ़ रही थी और पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में मानवाधिकार संकट गहराता जा रहा था।[4] अमेरिका और चीन के पाकिस्तान के पक्ष में रुख के बीच, सोवियत संघ ने भारत का स्पष्ट समर्थन किया। इस संधि के अंतर्गत यह प्रावधान था कि यदि दोनों में से किसी पर बाह्य आक्रमण होता है तो दूसरा देश उसकी सहायता करेगा। इस संधि के फलस्वरूप भारत को कूटनीतिक और सामरिक बल मिला तथा पाकिस्तान पर दबाव बनाने में सहायता प्राप्त हुई। इसके परिणामस्वरूप बांग्लादेश का निर्माण हुआ और भारत क्षेत्रीय महाशक्ति के रूप में स्थापित हुआ। सोवियत संघ ने भारत को सुरक्षा परिषद में समर्थन देने के साथ-साथ हथियार, रक्षा उपकरण और तकनीक भी उपलब्ध कराई।

इस प्रकार, भारत और रूस (तत्कालीन सोवियत संघ) के संबंधों की ऐतिहासिक यात्रा केवल राजनयिक हितों तक सीमित न रहकर रणनीतिक, रक्षा, आर्थिक और सांस्कृतिक साझेदारी में भी रूपांतरित होती गई। यह संबंध विश्वास, परस्पर सम्मान और सहयोग की भावना पर आधारित रहा, जिसने द्विपक्षीय रिश्तों को निरंतर मजबूती प्रदान की। यह ऐतिहासिक आधार आज भी भारत-रूस संबंधों की नींव के रूप में विद्यमान है।

शीत युद्ध काल में सहयोग

शीत युद्ध काल (1947–1991) विश्व राजनीति का एक ऐसा दौर था जब अमेरिका और सोवियत संघ दो विरोधी ध्रुवों के रूप में उभरे और विश्व को दो खेमों में बाँटने का प्रयास हुआ। भारत ने इस समय गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) की नीति को अपनाया, जिसका उद्देश्य था कि विकासशील देश किसी भी शक्ति खेमे में शामिल न होकर स्वतंत्र और संतुलित विदेश नीति अपनाएँ।[5] यद्यपि भारत औपचारिक रूप से गुटनिरपेक्ष रहा, परंतु व्यावहारिक रूप में सोवियत संघ के साथ उसके संबंध बहुआयामी और गहरे होते चले गए। इस काल में भारत और सोवियत संघ के बीच **सामरिक, आर्थिक और तकनीकी क्षेत्रों** में व्यापक सहयोग विकसित हुआ। सोवियत संघ ने भारत को भारी उद्योगों, ऊर्जा संयंत्रों, इस्पात कारखानों और वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थानों की स्थापना में सहयोग प्रदान किया। भारत की पंचवर्षीय योजनाओं में सोवियत आर्थिक मॉडल का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। भिलाई स्टील प्लांट, दुर्गापुर और बोकारो जैसे औद्योगिक केंद्रों की स्थापना में सोवियत सहायता अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही। इसके अलावा, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच प्रशिक्षण, उपकरण और विशेषज्ञता का आदान-प्रदान हुआ। भारत के रक्षा क्षेत्र में **सोवियत योगदान** अत्यंत महत्त्वपूर्ण और दीर्घकालिक रहा है। शीत युद्ध के दौरान भारत को रक्षा उपकरणों की आवश्यकता थी, परंतु पश्चिमी देशों ने भारत को हथियार देने में रुचि नहीं दिखाई। ऐसे में सोवियत संघ ने भारत को मिग-21 लड़ाकू विमान, टैंक, पनडुब्बी, हेलीकॉप्टर और अन्य हथियार प्रणालियाँ न केवल उपलब्ध कराईं, बल्कि उनके निर्माण के लिए तकनीकी सहयोग भी दिया। ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली के प्रारंभिक चरणों की नींव भी इन्हीं सहयोगों पर आधारित रही।[6] इस दौरान भारत ने अपनी रक्षा नीति में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने का मार्ग तैयार किया, जिसमें सोवियत सहयोग निर्णायक रहा। वैश्विक मंचों पर भी भारत और सोवियत संघ के दृष्टिकोण अक्सर समान रहे। गुटनिरपेक्ष आंदोलन में भारत की अग्रणी भूमिका और संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर सोवियत संघ का समर्थन, विशेष रूप से कश्मीर मुद्दे पर, भारत के हितों की रक्षा में सहायक सिद्ध हुआ। सोवियत संघ ने कई बार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत के पक्ष में वीटो का प्रयोग किया, जिससे भारत को अंतरराष्ट्रीय दबावों से राहत मिली।

सोवियत रूस विघटन और नई चुनौतियाँ (1991 के बाद)

1991 में सोवियत संघ के विघटन के साथ ही वैश्विक राजनीति में एक नया युग प्रारंभ हुआ। अमेरिका एकमात्र महाशक्ति के रूप में उभरा और शीत युद्ध की द्विध्रुवीय व्यवस्था समाप्त हो गई। भारत और सोवियत संघ के बीच जो घनिष्ठ संबंध दशकों तक चले थे, वे भी इस बदलाव से प्रभावित हुए। रूस के रूप में एक नए राष्ट्र का उदय हुआ, जो आंतरिक राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक अस्थिरता से जूझ रहा था। परिणामस्वरूप, भारत-रूस संबंधों में एक अस्थायी ठहराव और असमंजस की स्थिति उत्पन्न हुई। इस संक्रमण काल में भारत ने भी आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई और पश्चिमी देशों, विशेषतः अमेरिका से संबंध प्रगाढ़ करने शुरू किए। इसके कारण रूस-भारत संबंधों की प्राथमिकता में कमी आई। द्विपक्षीय व्यापार और रक्षा सहयोग में गिरावट देखने को मिली, क्योंकि रूस अपनी नयी पहचान और विदेश नीति को पुनर्परिभाषित कर रहा था। हालांकि, **1993 में भारत-रूस द्विपक्षीय संधि** और 2000 में *"विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी"* की घोषणा के साथ दोनों देशों ने अपने संबंधों को पुनर्स्थापित किया। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में रक्षा, अंतरिक्ष, विज्ञान और ऊर्जा क्षेत्रों में सहयोग को पुनर्जीवित किया गया। इस पुनर्संयोजन के दौर में ब्रह्मोस मिसाइल परियोजना, रक्षा खरीद, और परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में संयुक्त उपक्रमों ने संबंधों में नई जान फूंकी।[7] इस प्रकार, 1991 के बाद की अस्थिरता को पार करते हुए भारत और रूस ने एक नई रणनीतिक साझेदारी की शुरुआत की, जो आज भी निरंतर विकसित हो रही है और वैश्विक कूटनीतिक परिदृश्य में एक स्थायी सहयोग का उदाहरण प्रस्तुत करती है।

आर्थिक व तकनीकी सहयोग

भारत-रूस संबंधों का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष आर्थिक और तकनीकी सहयोग रहा है, जो समय के साथ विविध क्षेत्रों में विस्तार लेता गया है। **द्विपक्षीय व्यापार** की दृष्टि से दोनों देशों के बीच मजबूत सामर्थ्य है, किंतु वास्तविक व्यापार अपेक्षाकृत कम रहा है। भारत रूस से मुख्यतः रक्षा उपकरण, कच्चा तेल, उर्वरक और ऊर्जा संसाधन आयात करता है, जबकि भारत से रूस को फार्मास्यूटिकल्स, चाय, वस्त्र और इंजीनियरिंग सामान निर्यात किया जाता है। व्यापार में बाधाओं के रूप में बैंकिंग प्रणाली, भुगतान सुरक्षा, भौगोलिक दूरी और परिवहन अवसंरचना की सीमाएँ रही हैं। इसके बावजूद, दोनों देश व्यापार को 30 बिलियन डॉलर तक पहुँचाने के लक्ष्य पर कार्य कर रहे हैं। **अंतरिक्ष, विज्ञान और उच्च तकनीक**

के क्षेत्र में सहयोग भारत-रूस संबंधों का एक गौरवपूर्ण आयाम है। इसरो और रूसी अंतरिक्ष एजेंसी के बीच गगनयान परियोजना में सहयोग उल्लेखनीय है। भारत के पहले उपग्रह 'आर्यभट्ट' के प्रक्षेपण से लेकर आधुनिक अंतरिक्ष अभियानों तक रूस ने तकनीकी सहायता दी है।[8] विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में संयुक्त अनुसंधान, औद्योगिक नवाचार, और IT क्षेत्र में साझेदारी के माध्यम से दोनों देश 21वीं सदी की चुनौतियों के समाधान में संयुक्त प्रयास कर रहे हैं। **'मेक इन इंडिया' पहल में रूस की भूमिका** विशेष रूप से रक्षा उत्पादन और भारी मशीनरी के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण रही है। ब्रह्मोस मिसाइल का संयुक्त उत्पादन, रूसी तकनीक से हेलीकॉप्टर और टैंक निर्माण, और सुखोई-30 विमानों का भारत में निर्माण, आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़े कदम हैं। रूस ने भारत में औद्योगिक पार्क, रेलवे आधुनिकीकरण और स्मार्ट सिटी परियोजनाओं में भी रुचि दिखाई है।

सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंध

भारत और रूस के संबंध केवल रणनीतिक और आर्थिक स्तर पर ही सीमित नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक और शैक्षणिक क्षेत्र में भी यह एक समृद्ध परंपरा को साझा करते हैं। **भाषा, साहित्य और सिनेमा** में दोनों देशों के बीच पारस्परिक प्रभाव दशकों से बना हुआ है। हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता रूस में विशेष रही है—राज कपूर, अमिताभ बच्चन जैसे कलाकार रूस में घर-घर पहचाने जाते रहे। वहीं टॉल्सटॉय, गोर्की और दोस्तोवस्की जैसे रूसी लेखकों की कृतियाँ भारत में अनुवादित होकर लोकप्रिय हुईं और भारतीय साहित्य पर उनका गहरा प्रभाव पड़ा। **शैक्षणिक सहयोग और छात्र विनिमय** के क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच महत्वपूर्ण पहल हुई हैं।[9] हर वर्ष हजारों भारतीय छात्र रूस में विशेष रूप से चिकित्सा और तकनीकी शिक्षा हेतु जाते हैं। रूस के विभिन्न विश्वविद्यालयों में भारतीय अध्ययन केंद्र स्थापित हैं और भारतीय विश्वविद्यालयों में रूसी भाषा व संस्कृति का अध्ययन होता है।

इस प्रकार, सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंध भारत-रूस मैत्री के मानवीय पक्ष को उजागर करते हैं और जन-जन के बीच संबंधों को सुदृढ़ बनाते हैं, जो दीर्घकालीन सहयोग की आधारशिला हैं।

समकालीन संबंध और वैश्विक साझेदारी (2000 के बाद)

वर्ष 2000 के बाद भारत-रूस संबंधों ने एक नई रणनीतिक दिशा ग्रहण की। वर्ष 2000 में दोनों देशों ने **"रणनीतिक साझेदारी"** की घोषणा की, जिसे वर्ष 2010 में और अधिक उन्नत करते हुए **"विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी"** का दर्जा दिया गया। यह संबंध दोनों देशों के लिए केवल पारंपरिक सहयोग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वैश्विक मंचों पर संयुक्त हितों की रक्षा और अंतरराष्ट्रीय नीति निर्धारण में सक्रिय भागीदारी का प्रतीक बन गया। **रक्षा क्षेत्र में सहयोग** समकालीन भारत-रूस संबंधों का मूल आधार है। भारत की रक्षा जरूरतों का एक बड़ा हिस्सा रूस से आता है। *S-400 ट्रायम्फ मिसाइल प्रणाली* का अधिग्रहण भारत की वायु रक्षा क्षमताओं को मजबूती प्रदान करता है, वहीं *ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल* का संयुक्त उत्पादन भारत-रूस तकनीकी सहयोग का उत्कृष्ट उदाहरण है।[10] इसके अतिरिक्त, भारत में रूसी सहायता से युद्धपोत, टैंक, हेलीकॉप्टर व लड़ाकू विमान निर्माण की परियोजनाएँ चल रही हैं, जिससे 'मेक इन इंडिया' को भी बल मिल रहा है। **ऊर्जा क्षेत्र में**, भारत और रूस के बीच गहरा सहयोग है। रूस ने *रूपपुर परमाणु परियोजना* (बांग्लादेश में) में भारत के साथ मिलकर कार्य किया है, जो त्रिपक्षीय सहयोग का एक नवीन उदाहरण है। इसके अलावा, तेल व गैस क्षेत्र में भी भारत की कंपनियों ने रूस में निवेश किया है और ऊर्जा सुरक्षा के लिए दीर्घकालिक समझौते किए हैं। **अंतरिक्ष सहयोग** भी नई ऊँचाइयों पर पहुँच रहा है। भारत के *गगनयान मिशन* में रूस की मदद अहम है। इसके साथ ही अंतरिक्ष अनुसंधान, सैटेलाइट प्रक्षेपण, और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में दोनों देशों के वैज्ञानिक संस्थान मिलकर काम कर रहे हैं। **बहुपक्षीय मंचों** जैसे *ब्रिक्स (BRICS)*, *एससीओ (SCO)* और *जी-20* में भारत-रूस सहयोग वैश्विक शासन के वैकल्पिक मॉडल को प्रस्तुत करता है। ये मंच उभरती अर्थव्यवस्थाओं को वैश्विक नीतियों में अधिक भागीदारी का अवसर प्रदान करते हैं। **रूस-यूक्रेन युद्ध** (2022–वर्तमान) ने भारत-रूस संबंधों को एक नई परीक्षा में डाला, परंतु भारत ने संतुलित कूटनीति का परिचय दिया। भारत ने युद्ध में किसी पक्ष का समर्थन नहीं किया, परंतु बातचीत और शांतिपूर्ण समाधान की वकालत की। इससे भारत ने अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए रूस के साथ संबंधों को संतुलित रखा।

इस प्रकार, समकालीन भारत-रूस संबंध बहुआयामी, संतुलित और वैश्विक स्तर पर सहयोग की दिशा में उन्मुख हैं।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

-रूस संबंधों की समकालीन स्थिति वैश्विक राजनीति के बदलते परिदृश्य में अनेक **चुनौतियों और संभावनाओं** का सामना कर रही है। एक ओर जहाँ दोनों देश ऐतिहासिक मैत्री और रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ा रहे हैं, वहीं नई वैश्विक गठजोड़ों और प्रतिस्पर्धी हितों ने आपसी समीकरणों को और जटिल बना दिया है।

रूस-चीन समीपता और **भारत-अमेरिका सहयोग** इस द्विपक्षीय रिश्ते के सामने प्रमुख चुनौती के रूप में उभर कर आए हैं। रूस और चीन के बीच आर्थिक, सैन्य और कूटनीतिक सहयोग ने अंतरराष्ट्रीय संतुलन को प्रभावित किया है। वहीं भारत, इंडो-पैसिफिक रणनीति और क्वाड जैसे मंचों में अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ भागीदारी बढ़ा रहा है। इन परस्पर विरोधी झुकावों के बावजूद भारत और रूस ने अब तक अपनी पारंपरिक मैत्री को यथावत बनाए रखा है।

बदलती वैश्विक राजनीति, विशेषकर रूस-यूक्रेन युद्ध और पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों ने रूस को एशिया और वैश्विक दक्षिण की ओर रुख करने के लिए प्रेरित किया है। भारत इस नए रूसी दृष्टिकोण में एक विश्वसनीय और पुराने सहयोगी के रूप में उभरता है। ऊर्जा, रक्षा, कृषि, डिजिटल प्रौद्योगिकी और व्यापार के नए क्षेत्र द्विपक्षीय संबंधों को पुनर्परिभाषित कर रहे हैं।

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के उभार में भारत-रूस साझेदारी की भूमिका विशेष महत्व रखती है। दोनों देश यह मानते हैं कि वैश्विक शासन में पश्चिमी एकाधिकार को संतुलित करना आवश्यक है। ब्रिक्स, एससीओ और यूएन जैसे मंचों पर सहयोग कर वे बहुध्रुवीय, समावेशी और न्यायपूर्ण वैश्विक प्रणाली के पक्षधर बन रहे हैं। भारत का वैश्विक दक्षिण में बढ़ता प्रभाव और रूस का एशिया की ओर झुकाव, दोनों के सहयोग को नई रणनीतिक गहराई प्रदान करता है।

इस प्रकार, भले ही भारत-रूस संबंधों को भूराजनैतिक जटिलताओं और प्रतिस्पर्धी साझेदारियों की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा हो, परंतु **दोनों देशों के बीच विश्वास, साझा हित और ऐतिहासिक मैत्री** भविष्य में इस संबंध को और अधिक सशक्त व संतुलित दिशा में ले जा सकते हैं।

निष्कर्ष

भारत-रूस संबंधों का इतिहास एक समृद्ध, स्थिर और विविधतापूर्ण साझेदारी का परिचायक रहा है, जिसने समय के साथ अनेक वैश्विक और क्षेत्रीय परिवर्तनों को आत्मसात करते हुए निरंतर प्रगति की है। **ब्रिटिश औपनिवेशिक काल** में दोनों देशों के बीच सीधे राजनयिक संबंध नहीं थे, परंतु *'द ग्रेट गेम'* जैसे रणनीतिक संघर्षों के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से संपर्क की पृष्ठभूमि तैयार हुई। **स्वतंत्रता के पश्चात** भारत और तत्कालीन सोवियत संघ के संबंध गहरे होते गए—नेहरू युग में औद्योगिक, तकनीकी और कूटनीतिक सहयोग की नींव रखी गई, जिसे **1971 की मैत्री संधि** ने ठोस रणनीतिक आधार प्रदान किया। **शीत युद्ध काल** में सोवियत संघ भारत का सबसे विश्वसनीय साझेदार बनकर उभरा। रक्षा, ऊर्जा, विज्ञान और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सहयोग की मिसालें कायम हुईं। सोवियत विघटन के बाद उत्पन्न अस्थिरता के बावजूद भारत-रूस संबंधों में जल्द ही पुनर्संयोजन हुआ और 2000 के दशक में यह संबंध *विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी* में परिणत हुआ। समकालीन वैश्विक परिदृश्य में, जहां भू-राजनीतिक समीकरण तेजी से बदल रहे हैं—**अमेरिका-भारत निकटता** और **रूस-चीन गठजोड़** के बीच—भारत-रूस संबंधों की दिशा संतुलन और व्यावहारिकता की ओर उन्मुख है। *S-400 मिसाइल प्रणाली, ब्रह्मोस, परमाणु ऊर्जा सहयोग,* और *गगनयान मिशन* जैसे प्रोजेक्ट इस साझेदारी की गहराई को दर्शाते हैं। **भविष्य की संभावनाएँ** अनेक हैं—ऊर्जा सुरक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर सुरक्षा, हरित प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स और कृषि तकनीक में सहयोग को नया विस्तार मिल सकता है। भारत और रूस वैश्विक दक्षिण के दो प्रमुख स्तंभ बनकर उभर सकते हैं, जो बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को सुदृढ़ करने की क्षमता रखते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में, **भारत की रणनीतिक स्वायत्तता में रूस की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण** है। भारत, न तो पूरी तरह पश्चिमी खेमे में शामिल हुआ है और न ही चीन जैसे शक्तियों के दबाव में है। रूस, भारत की इस स्वतंत्र विदेश नीति का समर्थन करता आया है और बहुध्रुवीय दुनिया में भारत को एक स्वतंत्र शक्ति के रूप में स्वीकार करता है।

इस प्रकार, भारत-रूस संबंध अतीत से लेकर वर्तमान तक निरंतर विकसित होते हुए आज एक ऐसे मुकाम पर पहुँच चुके हैं जहाँ दोनों देश न केवल पारस्परिक लाभ के लिए, बल्कि वैश्विक शांति, स्थिरता और समावेशी विकास के लिए भी मिलकर कार्य कर रहे हैं। यह साझेदारी भविष्य में भी सामरिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक बनी रहेगी।

संदर्भ सूची

1. ठाकुर, र. (2019). *भारत-रूस कूटनीति के विविध आयाम* नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास पृ., 35.
2. वही
3. Korybko, A. (2021). *Russia's Pivot to Asia and India's Strategic Role* Moscow: RIAC Publications, pp. 59.
4. मिश्रा, र. (2021). *भारत-रूस संबंध: एक ऐतिहासिक अध्ययन* नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग ,पृ. 95
5. वही
6. वर्मा, स. (2020). *स्वतंत्र भारत की विदेश नीति और रूस* भोपाल: प्रयाग प्रकाशन,पृ. 58.
7. सामयिक विमर्श संपादक मंडल. (2020). *भारत-रूस परमाणु सहयोग: सामयिक विश्लेषण, सामयिक विमर्श,* P 59
8. Ministry of External Affairs, Government of India. (2023). *India-Russia Relations Overview* New Delhi, pp. 12.
9. Joshi, Y. (2022). *India and Russia in the Changing Global Order* New Delhi: Carnegie India,pp. 70.
10. वाणिज्य मंत्रालय. (2022). *भारत-रूस व्यापार और निवेश रिपोर्ट,* नई दिल्ली: भारत सरकार, पृ. 17.